भाकृअनुप
ICAR

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सम्यक खेती

(कृषि विकास-मेरा विश्वास)

मासिक ई पत्रिका (अगस्त 2022)

आजादी का अमृत महोत्सव विशेषांक-2022

कृषि विज्ञान केंद्र (फार्म साइंस सेंटर)

दलीप नगर, कानपुर देहात

प्रसार निदेशालय

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

कानपुर, उत्तर प्रदेश

संरक्षक:

डॉ0 डी0 आर0 सिंह
माननीय कुलपति,

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश

मार्गदर्शन:

डॉ0 अरविन्द कुमार सिंह
समन्वयक, प्रसार निदेशालय,
चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश

मुख्य संपादक:

डॉ0 विनोद प्रकाश
वैज्ञानिक (कृषि प्रसार)

संपादक/संकलन :

डॉ0 अरुण कुमार सिंह, वैज्ञानिक (उद्यान)
डॉ0 खालील खान, वैज्ञानिक (मृदाविज्ञान)
डॉ0 शशिकान्त, वैज्ञानिक (पशुपालन)
डॉ0 मिथलेश वर्मा, वैज्ञानिक (गृह विज्ञान)
डॉ0 अजय कुमार सिंह, वैज्ञानिक (सुरक्षा)
डॉ0 निमिषा अवस्थी, वैज्ञानिक (गृह वि0)

डॉ0 राम प्रकाश
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष
कृषि विज्ञान केंद्र, कानपुर देहात

प्रकाशन: ई-पत्रिका मासिक-1 (वर्ष-2022)

कृषि विज्ञान केंद्र, दलीप नगर, कानपुर देहात
(चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर, उत्तर प्रदेश)

कुलपति,
चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कानपुर, उत्तर प्रदेश

संदेश

आज़ादी का अमृत महोत्सव प्रगतिशील भारत के 75 वर्ष पूरे होने और यहां के लोगों, संस्कृति और उपलब्धियों के गौरवशाली इतिहास को याद करने और जश्न मनाने के लिए भारत सरकार की ओर से की जाने वाली एक पहल है। यह महोत्सव भारत की जनता को समर्पित है, जिन्होंने न केवल भारत को उसकी विकास यात्रा में आगे लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो आत्मनिर्भर भारत की भावना से प्रेरित है। आज़ादी का अमृत महोत्सव भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनीतिक, कृषि, और आर्थिक पहचान को प्रगति की ओर ले जाने वाली सभी चीजों का एक मूर्त रूप है। विश्वविधालय निरन्तर शिक्षा, शोध एवं प्रसार के माध्यम से नवीन कृषि तकनीकीयों एवं प्रजातियों के विकास तथा उनका प्रचार-प्रसार कर किसानों का ज्ञान व कौशल में सुनियोजित बृद्धि कर फसलों की उत्पादकता तथा किसानों की आय दोगुना करने में सफल हो रहा है वहीं विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त कर नया इतिहास रच रहे है। हर्ष का विषय है कि कृषि विज्ञान केन्द्र, दलीपनगर, कानपुर देहात (प्रसार निदेशालय, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर) कर द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव की श्रंखला में जुलाई-अगस्त, 2022 में आयोजित कराये गये विभिन्न कार्यक्रमों की उपलब्धियों व नवीनतम तकनीकी जानकारियों का संकलन के रूप में सम्यक खेती मासिक-ई-पत्रिका का प्रकाशन 75वें स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर किया जा रहा है। मुझे पूर्ण विस्वास है कि यह मासिक-ई-पत्रिका वैज्ञानिकों एवं कृषक बन्धुओं के लिए प्रेरणास्रोत के रूप में उपयोगी सिद्ध होगी।

(डी0आर0 सिंह)
कुलपति

कृषि विज्ञान केंद्र, कानपुर देहात अपनी निम्नलिखित अनूठी विशेषताओं के कारण एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है:

1. तकनीकी जनशक्ति और संपत्ति के मामले में मूल्यवान संसाधनों का निर्माण
2. स्थानीय विशिष्टता के अनुरूप प्रौद्योगिकियों की पुष्टि
3. अग्रणी प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन
4. हितधारकों के बीच क्षमता निर्माण
5. प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग, सूचना और आदानों में अग्रणी
6. योजना बनाने, लागू करने, क्रियान्वित करने और मूल्यांकन में सहभागी दृष्टिकोण
7. संतुलित पोषण हेतु मूल्य संवर्धित फसलों के प्रति जागरूकता

कृषि विज्ञान केंद्र का अधिदेश

प्रौद्योगिकी मूल्यांकन और उसके अनुप्रयोग हेतु प्रदर्शन तथा क्षमता विकास (TADA-CD)।

1. विभिन्न कृषि प्रणालियों के तहत कृषि प्रौद्योगिकियों की स्थान विशिष्टता की पहचान करने के लिए प्रक्षेत्र परीक्षण (ओएफटी)

2. किसानों के खेतों पर प्रौद्योगिकियों की उत्पादन क्षमता स्थापित करने के लिए प्रथम पंक्ति प्रदर्शन (एफएलडी)।

3. आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकियों पर अपने ज्ञान और कौशल को अद्यतन करने के लिए किसानों और विस्तार कर्मियों का क्षमता विकास।

4. जिले की कृषि अर्थव्यवस्था में सुधार के लिए सार्वजनिक, निजी और स्वैच्छिक क्षेत्र की पहल का समर्थन करने के लिए कृषि प्रौद्योगिकियों के ज्ञान और संसाधन केंद्र के रूप में काम करना।

5. किसानों को रुचि के विभिन्न विषयों पर सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) और अन्य मीडिया माध्यमों का उपयोग करते हुए कृषि परामर्श प्रदान करना।

6. गुणवत्तापूर्ण तकनीकी उत्पादों (बीज, रोपण सामग्री, जैव-एजेंट एवं पशुधन आदि) का उत्पादन करना और इसे किसानों को उपलब्ध कराना, अग्रिम पंक्ति विस्तार गतिविधियों का आयोजन करना, चयनित कृषि नवाचारों की पहचान करना और उनका दस्तावेजीकरण करना और केवीके के अधिदेश के भीतर चल रही योजनाओं और कार्यक्रमों के साथ तालमेल बिठाना।

निदेशक प्रसार
प्रसार निदेशालय
चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्यौगिक विश्वविद्यालय-कानपुर

संदेश

उत्तर प्रदेश की अर्थ व्यवस्था मुख्यत: कृषि पर आधारित है। कृषि एवं कृषि आधारित उद्योग का विकास करके ही प्रदेश का विकास संभव है। प्रदेश में खेती योग्य भूमि का दिनों-दिन कम होना, प्राकृतिक संसाधनों का क्षरण एवं जलवायु परिवर्तन से उभरती समस्याओं के बीच कृषि उत्पादकता एवं उसकी गुणवत्ता तथा कृषकों की आय में बृद्धि करना एक बड़ी चुनौती है। इसके लियें यह आवश्यक है कि कृषकों तक विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों के द्वारा विकसित उच्च उत्पादन, गुणवत्तायुक्त उत्पादन के साथ जलवायु परिवर्तन में भी अच्छे परिणाम वाली नवीनतम कृषि अनुसंधान एवं कृषि तकनीकियों को पहुँचाया जाए जिससे हमारा किसान विषम परिस्थितियों में बेहतर कर पाए। कृषि विज्ञान केन्द्र, दलीप नगर, कानपुर देहात विभिन्न प्रसार विधियों के द्वारा नवीनतम कृषि तकनीकियों को कृषकों तक निरंतर पहुचा रहा हैं जिससे कृषकों की आय दोगुना होने में मदत मिल रही है। विभिन्न प्रसार विधियों के अंतर्गत नवीनतम तकनीकीयों का संकलन के रूप में सम्यक खेती मासिक-ई-पत्रिका का प्रकाशन 75वें स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर किया जा रहा है।

कृषि विज्ञान केन्द्र, दलीप नगर, कानपुर देहात द्वारा प्रकाशित सम्यक खेती मासिक-ई-पत्रिका का यह अंक केन्द्र द्वारा किए गए एवं किए जाने वाले कार्यों के साथ-साथ नवीनतम कृषि तकनीकियों का प्रसार गांव-गांव एवं घर-घर पहुँचेगा, जो सभी वर्ग के किसानों के लिए लाभप्रद होगा।

(अरविन्द कुमार सिंह)
निदेशक प्रसार/समन्वयक

जनपद के दृष्टि में

कृषि विज्ञान केंद्र, दलीप नगर, कानपुर देहात की स्थापना चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर द्वारा आई.सी.ए.आर की वित्तीय सहायता से की गई थी जो 29 नवंबर 2004 को अस्तित्व में आया। यह शिवली के पास चौबेपुर बेला रोड पर स्थित है। कानपुर देहात गंगा-यमुना दोआब पर बना हिस्सा है. क्षेत्र की 80 प्रतिशत आबादी यमुना-सेंगर नदी के किनारे की पुरानी जलोढ़ भूमि पर स्थित है । 3021 वर्ग किलोमीटर में फैला यह जनपद में 222 हजार हेक्टेयर में खेती की जाती है जिसमें एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्रफल के अंतर्गत कुल 70 हजार हेक्टेयर, शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल 164 हजार हेक्टेयर तथा सकल सिंचित क्षेत्रफल 195 हजार हेक्टेयर है।

वर्ष / विकासखण्ड	कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल	वन	कृष्य बेकार भूमि	वर्तमान परती	अन्य परती	ऊसर एव कृषि के अयोग्य भूमि	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	चारागाह	उद्यानों वृक्षों एवं झाड़ियों का क्षेत्रफल
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
2007-08	314984	5796	4458	16539	15533	17475	27344	376	3914
2008-09	314984	5796	4248	16443	16207	17475	28044	376	2714
2009-10	314984	5796	4245	18284	16715	16975	28204	376	2714
1. रसूलाबाद	52386	2449	438	4099	1730	1790	6217	132	255
2. झीझक	24587	348	213	1295	1620	1757	2613	27	138
3. मैथा	39294	73	705	2888	3029	1802	5213	25	203
4. संदलपुर	22404	221	305	1841	909	1062	1808	1	225
5. डेरापुर	25453	452	310	1882	1845	1102	2303	1	180
6. अकबरपुर	27197	365	684	2239	1870	1842	2091	37	210
7. सरवनखेरा	30061	387	435	1088	2410	1637	1373	112	283
8. राजपुर	25246	349	546	1024	1048	1957	2814	9	271
9. मलासा	28417	633	403	536	1023	1257	1673	3	581
10. अमरौधा	37204	519	127	1083	1140	2108	1457	29	368
योग ग्रामीण	312249	5796	4166	17975	16624	16314	27562	376	2714
योग नगरीय	2735	0	79	309	91	661	642	0	0
योग जनपद	314984	5796	4245	18284	16715	16975	28204	376	2714

जनपद के दृष्टि में

किसान भाई हमसे समयोचित, संतुलित, संपूरक, स्वस्थ, सस्ती एवं टिकाऊ खेती हेतु आई सी टी (सूचना संचार प्रौद्योगिकी) के माध्यम से सम्यक खेती (कृषि विकास-मेरा विश्वास) से जुड़ सकते है –

1- मासिक पत्रिका- सम्यक खेती (कृषि विकास-मेरा विश्वास)
2- व्हाट्सप्प ग्रुप- सम्यक खेती (https://chat.whatsapp.com/GgWFHEAGPk3KjRzTSIXWSy)
3- यू ट्यूब - सम्यक खेती (https://youtube.com/channel/UCmfyTgT_bBw-irBsTrLF7qg)
4- फेस बुक - सम्यक खेती (कृषि विकास-मेरा विश्वास) (https://www.facebook.com/103313329131546/posts/103326882463524/?substory_index=2)
5- इंस्टाग्राम - सम्यक खेती- @samyak_kheti

वर्ष / विकासखण्ड	शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल	एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्रफल	सकल बोया गया क्षेत्रफल				गन्ने के लिये तैयार की गई भूमि	शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल	सकल सिंचित क्षेत्रफल
			कुल	रबी	खरीफ	जायद			
1	11	12	13	14	15	16	17	18	19
2007-08	223549	92158	315707	183036	130132	2529	10	163646	211583
2008-09	223681	92253	315934	182166	131246	2522	0	163140	210779
2009-10	221675	69735	291410	183201	105678	2531	0	163857	195166
1. रसूलाबाद	35276	13309	48585	35912	12088	685	0	26411	30662
2. झीझक	16576	5372	21948	12394	9313	241	0	16255	18337
3. मैथा	25356	8585	33941	21316	12354	271	0	19005	21437
4. संदलपुर	16032	5450	21482	12613	8645	224	0	10891	14507
5. डेरापुर	17378	3641	21019	12997	7935	87	0	11779	16590
6. अकबरपुर	17859	8159	26018	14963	10713	342	0	11663	14337
7. सरवनखेरा	22336	7354	29690	18708	10512	370	0	17125	21028
8. राजपुर	17228	6578	23806	15013	8756	37	0	14880	18154
9. मलासा	22308	6354	28662	18526	10069	67	0	17690	20741
10. अमरौधा	30373	4652	35025	20075	14748	202	0	17757	18157
योग ग्रामीण	220722	69454	290176	182517	105133	2526	0	163456	193950
योग नगरीय	953	281	1234	684	545	5	0	401	1216
योग जनपद	221675	69735	291410	183201	105678	2531	0	163857	195166

दिनांक 11 से 17 अगस्त 2022 तक आजादी का “अमृत महोत्सव स्वतंत्रता सप्ताह” कार्यक्रम विवरण

क्रमांक	कार्यक्रम का विषय	दिनांक	सहभागियों की संख्या
1.	केंद्र की साज-सज्जा के साथ स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम	11.08.2022	23
2.	केंद्र की साज-सज्जा के साथ स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम	11.08.2022	23
3.	गौ आधारित प्राकृतिक खेती की आवश्यकता एवं संभावनाए	12.08.2022	55
4.	कुटीर उद्योग महिलाओं की आय का साधन	13.08.2022	52
5.	किसान समूह की आवश्यकता एवं संभावनाए	14.08.2022	53
6.	ध्वजा रोहण एवं पौधरोपड़	15.08.2022	112
7.	फलदार एवं शोभाकारी पौधों की नर्सरी हेतु ग्रामीण जागरूकता	16.08.2022	प्रस्तावित (50)
8.	कृषि में नवीनतम तकनीकी का प्रयोग	17.08.2022	प्रस्तावित (50)

तिरंगा झण्डा वितरण कार्यक्रम

केंद्र की साज-सज्जा के साथ स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम

कृषि विज्ञान केंद्र, दलीप नगर, कानपुर देहात
(चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर, उत्तर प्रदेश)

दिनांक 11 से 17 अगस्त 2022 तक आजादी का "अमृत महोत्सव स्वतंत्रता सप्ताह" कार्यक्रम विवरण

गौ आधारित प्राकृतिक खेती की आवश्यकता एवं संभावनाए

कुटीर उद्योग महिलाओं की आय का साधन

किसान समूह की आवश्यकता एवं संभावनाए

प्रेस विज्ञप्ति

WORLD खबर एक्सप्रेस | कानपुर नगर | 04

आजादी के 75वें अमृत महोत्सव के अवसर पर वितरित किए गए तिरंगा ध्वज

किसानों को दी प्राकृतिक खेती की जानकारी

शाश्वत टाइम्स
हिन्दी दैनिक

आजादी के 75वें अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में दी किसानों को प्राकृतिक खेती की जानकारी, वितरित किए तिरंगा ध्वज

14/08/2022

दि ग्राम टुडे | जौनपुर,सुल्तानपुर,आजमगढ़

कुटीर उद्योग महिलाओं के लिए आय का साधन विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न

समूह अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन 2022

दिनांक 17-18 जुलाई 2022 को कृषि विज्ञान केंद्र, कानपुर देहात द्वारा समूह अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (दलहन) के अंतर्गत अरहर की नरेंद्र अरहर-2 प्रजाति का प्रदर्शन मैथा विकास खंड के ग्राम असनीपुरवा, भवानीपुर, औरंगाबाद एवं सलेमपुर में 50 किसानों के 20 एकड़ प्रक्षेत्र हेतु बीज का वितरण किया गया।

22 कानपुर न्यूज़ DT दीनार टाइम्स

▸ कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर ने किसानों को वितरित किए उन्नत बीज

▸ दलहनी एवं तिलहनी फसलों के प्रदर्शन हेतु उन्नत बीज

डी टी एन एन। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित दलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा आज किसानों को तिल एवं अरहर फसल के उन्नत बीजों का वितरण किया गया। जिसका उद्देश्य कृषकों के प्रक्षेत्रों पर नवीन उन्नत बीजों का प्रदर्शन करना है जिससे किसानों की सकल आय में बढ़ोतरी हो। इस अवसर पर केंद्र के अध्यक्ष डॉ अशोक कुमार ने किसानों को संबोधित करते हुए बताया कि अरहर की बुवाई के समय राइजोबियम कल्चर से बीजों को अवश्य उपचारित कर लें। जिससे कि वायुमंडलीय नाइट्रोजन मृदा में संकलित होती है और मृदा उर्वरता पड़ती है। उन्होंने बताया की अरहर का बीज 10 से 12 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर आवश्यकता पड़ती है तथा बुवाई के समय 2 ग्राम कार्बेंडाजिम प्रति किलोग्राम बीज की दर से शोधित कर लें। जिससे कि रोग लगने की संभावना कम रहती है। डॉक्टर विनोद प्रकाश ने बताया कि अरहर की फसल में 15 से 20 किलोग्राम नाइट्रोजन, 40 से 45 किलोग्राम फास्फोरस और 40 किलोग्राम पोटाश तथा 25 किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर आवश्यक होता है। इस अवसर पर किसानों को नरेंद्र अरहर-2 नामक प्रजाति वितरित की गई। जबकि तिल की जीजेटी-5 प्रजाति किसानों को वितरित की गई जो कि 10 से 12 कुंतल उपज प्रदान करती है इस अवसर पर केंद्र के वैज्ञानिक डॉक्टर ए के सिंह, डॉक्टर अरुण कुमार सिंह, डॉक्टर खलील खान, डॉक्टर शशिकांत, डॉक्टर निमिषा अवस्थी सहित अन्य लोग उपस्थित रहे

राष्ट्रीय सहारा

कानपुर • सोमवार • 18 जुलाई • 2022

प्रदर्शन खेती को किसानों को दिये गये अरहर व तिल के उन्नत बीज

कानपुर (एसएनबी)। सीएसए के दलीपनगर कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा रविवार को प्रदर्शन खेती के लिए किसानों को तिल व अरहर फसल के उन्नत बीज मुहैया कराये गये। केन्द्र अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार ने किसानों को बुवाई से पूर्व बीज को राइजोबियम कल्चर से जरूर उपचारित करने को कहा। किसानों को नरेन्द्र अरहर-2 व तिल की जीजेटी-5 प्रजाति के बीज दिये गये हैं। केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. एके सिंह, डॉ. अरुण कुमार सिंह, डॉ. खलील खान, डॉ. शशिकांत व डॉ. निमिषा अवस्थी आदि मौजूद रहे।

वर्ष 16 अंक 195 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रु० कानपुर, सोमवार 18 जुलाई 2022

RNI N.UPHIN/2007/27090

दैनिक नगर छाया
आप की आवाज़.....

www.nagarchhaya.com

किसानों को वितरित किए गए दलहनी एवं तिलहनी फसलों के प्रदर्शन हेतु उन्नत बीज

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित दलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा आज किसानों को तिल एवं अरहर फसल के उन्नत बीजों का वितरण किया गया। जिसका उद्देश्य कृषकों के प्रक्षेत्रों पर नवीन उन्नत बीजों का प्रदर्शन करना है जिससे किसानों की सकल आय में बढ़ोतरी हो। इस अवसर पर केंद्र के अध्यक्ष डॉ अशोक कुमार ने किसानों को संबोधित करते हुए बताया कि अरहर की बुवाई के समय राइजोबियम कल्चर से बीजों को अवश्य उपचारित कर लें। जिससे कि वायुमंडलीय नाइट्रोजन मृदा में संकलित होती है और मृदा उर्वरता पड़ती है। उन्होंने बताया की अरहर का बीज 10 से 12 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर आवश्यकता पड़ती है तथा बुवाई के समय 2 ग्राम कार्बेंडाजिम प्रति किलोग्राम बीज की दर से शोधित कर लें। जिससे कि रोग लगने की संभावना कम रहती है। डॉक्टर विनोद प्रकाश ने बताया कि अरहर की फसल में 15 से 20 किलोग्राम नाइट्रोजन, 40 से 45 किलोग्राम फास्फोरस और 40 किलोग्राम पोटाश तथा 25 किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर आवश्यक होता है। इस अवसर पर किसानों को नरेंद्र अरहर-2 नामक प्रजाति वितरित की गई। जबकि तिल की जीजेटी-5 प्रजाति किसानों को वितरित की गई जो कि 10 से 12 कुंतल उपज प्रदान करती है इस अवसर पर केंद्र के वैज्ञानिक डॉक्टर ए के सिंह, डॉक्टर अरुण कुमार सिंह, डॉक्टर खलील खान, डॉक्टर शशिकांत, डॉक्टर निमिषा अवस्थी सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

आज — महानगर — कानपुर — 18 जुलाई 2022 — 4

किसानों को वितरित किये गये तिल एवं अरहर फसल के उन्नत बीज

किसानों को बीज वितरित करते वैज्ञानिक।

कानपुर, 17 जुलाई। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित दलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र की ओरसे किसानों को तिल एवं अरहर फसल के उन्नत बीजों का वितरण किया गया। जिसका उद्देश्य कृषकों के प्रक्षेत्रों पर नवीन उन्नत बीजों का प्रदर्शन करना है जिससे किसानों की सकल आय में बढ़ोतरी हो। केंद्र के अध्यक्ष डॉ अशोक कुमार ने किसानों को संबोधित करते हुए बताया कि अरहर की बुवाई के समय राइजोबियम कल्चर से बीजों को अवश्य उपचारित कर लें। जिससे कि वायुमंडलीय नाइट्रोजन मृदा में संकलित होती है और मृदा उर्वरता पड़ती है। उन्होंने बताया की अरहर का बीज 10 से 12 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर आवश्यकता पड़ती है तथा बुवाई के समय 2 ग्राम कार्बेंडाजिम प्रति किलोग्राम बीज की दर से शोधित कर लें। जिससे कि रोग लगने की संभावना कम रहती है। डॉ विनोद प्रकाश ने बताया कि अरहर की फसल में 15 से 20 किलोग्राम नाइट्रोजन, 40 से 45 किलोग्राम फास्फोरस और 40 किलोग्राम पोटाश तथा 25 किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर आवश्यक होता है। इस अवसर पर किसानों को नरेंद्र अरहर-2 नामक प्रजाति वितरित की गई। जबकि तिल की जीजेटी-5 प्रजाति किसानों को वितरित की गई जो कि 10 से 12 कुंतल उपज प्रदान करती है इस अवसर पर केंद्र के वैज्ञानिक डॉक्टर ए के सिंह, डॉक्टर अरुण कुमार सिंह, डॉक्टर खलील खान, डॉक्टर शशिकांत, डॉक्टर निमिषा अवस्थी सहित अन्य लोग उपस्थित रहे

कृषि विज्ञान केंद्र, दलीप नगर, कानपुर देहात
(चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर, उत्तर प्रदेश)

समूह अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन 2022

दिनांक 17-18 जुलाई 2022 को कृषि विज्ञान केंद्र, कानपुर देहात द्वारा समूह अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (तिलहन) के अंतर्गत तिल की जी0जे0टी0-5 प्रजाति का प्रदर्शन मैथा विकास खंड के ग्राम असनीपुरवा, भवानीपुर, औरंगाबाद एवं सलेमपुर में 35 किसानों के 10 एकड़ प्रक्षेत्र हेतु बीज का वितरण किया गया।

प्रगति प्रभात — कानपुर, सोमवार 18 जुलाई 2022

किसानों को दलहनी व तिलहनी फसलों के उन्नत बीज का वितरण

कानपुर 7 सीएसए के अधीन संचालित दलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा आज किसानों को तिल एवं अरहर फसल के उन्नत बीजों का वितरण किया गया। जिसका उद्देश्य कृषकों के प्रक्षेत्रों पर नवीन उन्नत बीजों का प्रदर्शन करना है जिससे किसानों की सकल आय में बढ़ोतरी हो। इस अवसर पर केंद्र के अध्यक्ष डॉ अशोक कुमार ने किसानों को संबोधित करते हुए बताया कि अरहर की बुवाई के समय राइजोबियम कल्चर से बीजों को अवश्य उपचारित कर लें। जिससे कि वायुमंडलीय नाइट्रोजन मृदा में संकलित होती है और मृदा उर्वरता पड़ती है। उन्होंने बताया की अरहर का बीज 10 से 12 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर आवश्यकता पड़ती है तथा बुवाई के समय 2 ग्राम कार्बेंडाजिम प्रति किलोग्राम बीज की दर से शोधित कर लें। जिससे कि रोग लगने की संभावना कम रहती है। डॉक्टर विनोद प्रकाश ने बताया कि अरहर की फसल में 15 से 20 किलोग्राम नाइट्रोजन, 40 से 45 किलोग्राम फास्फोरस और 40 किलोग्राम पोटाश तथा 25 किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर आवश्यक होता है। इस अवसर पर किसानों को नरेंद्र अरहर-2 नामक प्रजाति वितरित की गई। जबकि तिल की जीजेटी-5 प्रजाति किसानों को वितरित की गई जो कि 10 से 12 कुंतल उपज प्रदान करती है इस अवसर पर केंद्र के वैज्ञानिक डॉक्टर ए के सिंह, डॉक्टर अरुण कुमार सिंह,डॉक्टर खलील खान,डॉक्टर शशिकांत,डॉक्टर निमिषा अवस्थी सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

आज किसानों को तिल एवं अरहर फसल के उन्नत बीजों का वितरण किया गया। जिसका उद्देश्य कृषकों के प्रक्षेत्रों पर नवीन उन्नत बीजों का प्रदर्शन करना है जिससे किसानों की सकल आय में बढ़ोतरी हो। इस अवसर पर केंद्र के अध्यक्ष डॉ अशोक कुमार ने किसानों को संबोधित करते हुए बताया कि अरहर की बुवाई के समय राइजोबियम कल्चर से बीजों को अवश्य उपचारित कर लें। जिससे कि वायुमंडलीय नाइट्रोजन मृदा में संकलित होती है और मृदा उर्वरता पड़ती है। उन्होंने बताया की अरहर का बीज 10 से 12 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर आवश्यकता पड़ती है तथा बुवाई के समय 2 ग्राम कार्बेंडाजिम प्रति किलोग्राम बीज की दर से शोधित कर लें। जिससे कि रोग लगने की संभावना कम रहती है। डॉक्टर विनोद प्रकाश ने बताया कि अरहर की फसल में 15 से 20 किलोग्राम नाइट्रोजन, 40 से 45 किलोग्राम फास्फोरस और 40 किलोग्राम पोटाश तथा 25 किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर आवश्यक होता है। इस अवसर पर किसानों को नरेंद्र अरहर-2 नामक प्रजाति वितरित की गई। जबकि तिल की जीजेटी-5 प्रजाति किसानों को वितरित की गई जो कि 10 से 12 कुंतल उपज प्रदान करती है इस अवसर पर केंद्र के वैज्ञानिक डॉक्टर ए के सिंह, डॉक्टर अरुण कुमार सिंह,डॉक्टर खलील खान,डॉक्टर शशिकांत,डॉक्टर निमिषा अवस्थी सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

दैनिक भास्कर

फसलों के उन्नत बीज का वितरण

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित दलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा आज किसानों को तिल एवं अरहर फसल के उन्नत बीजों का वितरण किया गया। उद्देश्य कृषकों के प्रक्षेत्रों पर नवीन उन्नत बीजों का प्रदर्शन करना है जिससे किसानों की सकल आय में बढ़ोतरी हो। इस अवसर पर केंद्र के अध्यक्ष डॉ अशोक ने किसानों को संबोधित करते हुए बताया कि अरहर की बुवाई के समय राइजोबियम कल्चर से बीजों को उपचारित कर लें।

WORLD खबर EXPRESS

कृषि विज्ञान केंद्र दलीप न...

किसानों को वितरित किए ... एवं तिलहनी फसलों के ...

...हनी व ...हनी फसलों के प्रदर्शन हेतु उन्नत...

...पुर देहात। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौ...

...ews24.com

...ानों को दिए गए दलहनी व ...हनी फसलों के प्रदर्शन हेतु उन्नत

https://rionews24.com/ ...-5953

राष्ट्रीय स्वरूप — कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित, वर्ष : 14 अंक : 20, कानपुर, सोमवार, 18 जुलाई 2022, नगर संस्करण, पृष्ठ 12, मूल्य : 2.00 रुपये

कृषि विज्ञान केंद्र ने किसानों को वितरित किए दलहनी व तिलहनी फसलों के उन्नत बीज

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित दलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा आज किसानों को तिल एवं अरहर फसल के उन्नत बीजों का वितरण किया गया। जिसका उद्देश्य कृषकों के प्रक्षेत्रों पर नवीन उन्नत बीजों का प्रदर्शन करना है जिससे किसानों की सकल आय में बढ़ोतरी हो। इस अवसर पर केंद्र के अध्यक्ष डॉ अशोक कुमार ने किसानों को संबोधित करते हुए बताया कि अरहर की बुवाई के समय राइजोबियम कल्चर से बीजों को अवश्य उपचारित कर लें। जिससे कि वायुमंडलीय नाइट्रोजन मृदा में संकलित होती है और मृदा उर्वरता पड़ती है। उन्होंने बताया की अरहर का बीज 10 से 12 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर आवश्यकता पड़ती है तथा बुवाई के समय 2 ग्राम कार्बेंडाजिम प्रति किलोग्राम बीज की दर से शोधित कर लें। जिससे कि रोग लगने की संभावना कम रहती है। डॉक्टर विनोद प्रकाश ने बताया कि अरहर की फसल में 15 से 20 किलोग्राम नाइट्रोजन, 40 से 45 किलोग्राम फास्फोरस और 40 किलोग्राम पोटाश तथा 25 किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर आवश्यक होता है। इस अवसर पर किसानों को नरेंद्र अरहर-2 नामक प्रजाति वितरित की गई। जबकि तिल की जीजेटी-5 प्रजाति किसानों को वितरित की गई जो कि 10 से 12 कुंतल उपज प्रदान करती है इस अवसर पर केंद्र के वैज्ञानिक डॉक्टर ए के सिंह, डॉक्टर अरुण कुमार सिंह,डॉक्टर खलील खान,डॉक्टर शशिकांत,डॉक्टर निमिषा अवस्थी सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

के0वी0के0 दलीप नगर, कानपुर देहात पर स्थित प्रदर्शन इकाई

1- जैविक खाद उत्पादन इकाई

के०वी०के०, दलीप नगर, कानपुर देहात के प्रक्षेत्र पर एक जैविक खाद उत्पादन इकाई भी स्थापित की गयी है जिसमें २ नैडप कम्पोस्ट गड्ढे तथा ६ वर्मी कम्पोस्ट बैड है। प्रति वर्ष ३ कुन्तल वर्मी कम्पोस्ट , ६० कुन्तल नैडप कम्पोस्ट प्राप्त हो रहा है। प्रक्षेत्र की पशुधन इकाई का अवषेश पदार्थ नैडप कम्पोस्ट व गड्ढा कम्पोस्ट हेतु तथा गोबर वर्मी कम्पोस्ट हेतु प्रयोग किया जाता है। इकाई से प्राप्त जैविक खाद को प्रक्षेत्र के परीक्षणों व केन्द्र की पोषक गृह वाटिका में प्रयोग किया जा रहा है। जिससे गृह वाटिका हेतु अकार्बनिक रसायनो की आवश्यकता नही पड़ती है।

2- पोषण तत्व प्रधान फसलों की पोषण वाटिका

के०वी०के०, दलीप नगर कानपुर देहात पर एम०एस० स्वामीनाथन फाउडेशन द्वारा संचालित ग्रामीण जनता में कुपोषण दूर करने हेतु पोषण तत्व प्रधान फसलों की पोषण वाटिका की स्थापना की गई है।

3- क्राप कैफेटेरिया

केन्द्र पर क्राप कैफेटेरिया एवं पशुओं के लिये उत्तम चारा कैफेटेरिया के रूप में सीजन के अनुसार विभिन्न फसलों व प्रजातियों का प्रदर्शन किया जाता है। ये प्रजातियां उत्तम प्रकार की होती है। यह कैफेटेरिया विधि व परिणाम प्रदर्शन का कार्य करता हैं जिसमें जनपद व जनपद के बाहर के कृषक विभिन्न प्रजातियों को देखकर उनसे प्रभावित होकर अपने खेतो पर भी वही प्रजातियां लगाने का प्रयास करते है।

4- मृदा एवं जल परीक्षण प्रयोगशाला

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद , नई दिल्ली से प्राप्त १०० : अनुदान से केन्द्र पर एक मृदा एवं जल परीक्षण प्रयोगशाला केन्द्र के प्रशासनिक भवन में स्थापित की गई है। प्रयोगशाला पूर्णतः कार्यकारी अवस्था में है। जनपद के कषकों को केन्द्र के वैज्ञानिको द्वारा मृदा परीक्षण की उपयोगिता एवं मृदा नमूना लेने की विधि पर परीक्षण एवं प्रयोग कराये जाते है। जिससे जनपद के कृषकों में धीरे-धीरे जागरूकता बढ़ रही है। वे अपने खेतो से मृदा नमूने लाते है जिन्हे केन्द्र की लैब में परीक्षण के उपरान्त किसानो को परिणामों से अवगत करा दिया जाता है तथा साथ ही खेत में मृदा परीक्षण एवं फसल के अनुसार उर्वरकों की संतुलित मात्रा की संस्तुति की जाती है। के०वी०के प्रक्षेत्र का मृदा उर्वरता चार्ट बना लिया गया है तथा जनपद का मृदा उर्वरता स्तर चार्ट बनाने की प्रकिया जारी है।

5- कुक्कुट पालन प्रर्दशन इकाई

कृषि विज्ञान केन्द्र दलीपनगर के परिसर में कुक्कुट पालन इकाई की स्थापना अगस्त २०२१ में की गयी जिसमें ५०पक्षीयों की क्षमता है इसमें क्राइलर प्रजाति के चूजे रखे गये है यह यूनिट किसानों के रोजगार परक प्रशिक्षण कार्य हेतु चल रही है जिसको विभिन्न गॉवो के लोग देखकर रोजगार हेतु जागरूक होते है।

के0वी0के0 दलीप नगर, कानपुर देहात पर स्थित प्रदर्शन इकाई

6. मछली पालन प्रदर्शन इकाई

कृषि विज्ञान केन्द्र दलीपनगर के प्रक्षेत्र पर 50मीटर लम्बा एवं 20 मीटर चौडा तालाब का निमार्ण किया गया है जिसको जल संरक्षण के साथ ही साथ मछली पालन का कार्य किया जा रहा है जिसकी स्थापना 2020 मे हुआ जिसमें इस समय अगस्त माह में 1350 मछलियो का पालन किया जा रहा है जिसमें उपरी सतह पर कतला मध्य भाग में रोहॅू एवं निचले स्तर में नैन का पालन किया जा रहा है जिसकी क्षमता लगभग1000 किलो ग्राम है। जिसका मुख्य उददेश्य किसानों के लिए रोजगार परक प्रशिक्षण कार्य है। इसको जिले के किसानों ने देखा एवं प्रशंसा किये। प्रतिवर्ष विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों से आये हुये कृषि स्नातक के छात्र जो रावे के कार्य हेतु कार्य अनुभव प्रदान करता है।

7. गाय पालन प्रर्दशन इकाई

कृषि विज्ञान केन्द्र दलीपनगर के प्रक्षेत्र पर चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के पशुपालन विभाग से अगस्त 2020 में साहीवाल नस्ल की गाय एवं बछिया आयी जिसका नाम कमलेश एवं श्रद्धा है । जिसका मुख्य उद्देश्य गौ आधारित जैविक खेती एवं किसानो के रोजगार परक प्रशिक्षण हेतु प्रदर्शित करने हेतु डेरी यूनिट के रूप में है ।

8. अमरूद की सघन बागवानी

के0वी0के0, दलीप नगर, कानपुर देहात पर एक अमरूद की सघन बागवानी की आदर्श इकाई टपक सिंचाई पद्धति के साथ स्थापित की गई है। यह इकाई केन्द्र पर लगभग 384 वर्ग मी0 (16 ग 24) क्षेत्र में स्थापित की गई है जिसमें लाइन से लाइन की दूरी 2 मी0 तथा पौध से पौध की दूरी 1.5 मी0 है। इस प्रकार इस इकाई में अमरूद की इलाहाबाद सफेदा व ललित प्रजाति के कुल 128 अमरूद के पौधे रोपित किये गये हैं। आशा की जाती है कि यह इकाई किसानों में सघन बागवानी को प्रोत्साहित करेगी।

9. मौन पालन इकाई

के0वी0के0, दलीप नगर, कानपुर देहात पर एक मौन पालन इकाई की शुरूआत हो गयी है। इस इकाई का किसानों को प्रशिक्षण एवं बाहर से आये हुये कृषकों को जानकारी देने हेतु प्रयोग किया जा रहा है।

के0वी0के0 दलीप नगर, कानपुर देहात पर स्थित प्रदर्शन इकाई

10. आदर्श पोषण वाटिका प्रदर्शन इकाई

के0वी0के0, दलीप नगर, कानपुर देहात पर 250 वर्ग मी0 में आदर्श पोष्पाण वाटिका प्रदर्शन इकाई स्थापित है इकाई में कुल 12 क्यारियाँ हैं जिनमें वर्ष पर्यन्त सब्जियों की उपलब्धता बनी रहे इस आधार पर सब्जियों के बीज व पौधे लगाये जाते हैं। इकाई का मुक्ष्य उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को गृह वाटिका पर प्रशिक्षण देना जिससे कि महिलायें गृह वाटिका अपने घर पर लगा कर कुपोषण से बच सकें।

11. पाली हाउस

के0वी0के0, दलीप नगर, कानपुर देहात पर इकाई की स्थापना वर्ष 2021 में की गई जिसमें सहजन की विभिन्न प्रजातियों एवं सब्जियों की नर्सरी तैयार की जा रही है।

12. उद्यान नर्सरी प्रदर्शन इकाई

के0वी0के0, दलीप नगर, कानपुर देहात पर उद्यान इकाई की स्थापना वर्ष 2020 में की गई जिसमें फलदार पौधे/शाकभाजी/ कृषि वानिकी की पौध उत्पादित की जा रही है।

13. मातृ वृक्ष इकाई

के0वी0के0, दलीप नगर, कानपुर देहात पर इकाई की स्थापना वर्ष 2021 में की गई जिसमें अमरूद, आँवला, बेल एवं बेर की विभिन्न प्रजातियों के पौधे रोपित किये गये हे।

14. चारा उत्पादन इकाई

के0वी0के0, दलीप नगर कानपुर देहात पशुओं के लिये उत्तम किस्म का बहुवर्षीय घास जिसमें नेपियर घास हाइब्रिड नेपियर घास एवं गिन्नी घास का प्रदर्शन इकाई स्थापित किया गया है इसके अलावा मौसमी घास जिसमें रबी में बरसीम एवं जई तथा खरीफ में विभिन्न प्रजातियों के चरी इकाई का प्रदर्शन किया जाता है जिसकों जनपद के किसान देख कर अपने प्रक्षेत्र पर पशुओं के लिये चारा उगाने का कार्य करते हैं। जिससे हरे चारे की कमी को दूर किया जाता है।

अरहर की खेती

- ❖ अरहर बोने के लिये हल्की दोमट अथवा मध्यम भारी प्रचुर स्फुर वाली भूमि, जिसमें समुचित पानी निकासी हो उपयुक्त है।
- ❖ आई पी ए 203 प्रजाति- बाँझपन मोज़ेक रोग (एसएमडी), फ़ुसैरियम विल्ट, और फाइटोफ्थोरा ब्लाइट का प्रतिरोध, उच्च उपज प्रकृति के साथ बड़े बीज का आकार।
- ❖ IPH 09-5- उच्च उपज क्षमता के साथ एसएमडी और विल्ट प्रतिरोध ।
- ❖ नरेंद्र अरहर-1, नरेंद्र अरहर-2 एवं नरेंद्र अरहर-3
- ❖ अंतरवर्तीय फसल पद्धति से मुख्य फसल की पूर्ण पैदावार एंव अंतरवर्तीय फसल से अतिरिक्त पैदावार प्राप्त होगी।
- ❖ अरहर मूंगफली या सोयाबीन 2:4 कतारों कें अनुपात में (कतारों दूरी 30 से.मी.)
- ❖ उड़द या मूंग 1:2 कतारों कें अनुपात में (कतारों दूरी 30 से.मी.)
- ❖ उन्नत जाति जे.के.एम.-189 या ट्राम्बे जवाहर तुवर-501 को सोयाबीन या मूंग या मूंगफली के साथ अंतरवर्तीय फसल में उपयुक्त पायी गई है।
- ❖ अरहर की बोनी वर्षा प्रारम्भ होने के साथ ही कर देना चाहिए। सामान्यतः जून के अंतिम सप्ताह से लेकर जुलाई के प्रथम सप्ताह तक बोनी करें। कतारों के बीच की दूरी शीघ्र पकने वाली जातियों के लिए 60 से.मी. व मध्यम तथा देर से पकने वाली जातियों के लिए 70 से 90 से.मी. रखना चाहिए। कम अवधि की जातियों के लिए पौध अंतराल 15-20 से.मी. एवं मध्यम तथा देर से पकने वाली जातियों के लिए 25-30 से.मी. रखें।
- ❖ जल्दी पकने वाली जातियों का 20-25 किलोग्राम एवं मध्यम पकने वाली जातियों का 15 से 20 कि.ग्रा. बीज/हेक्टर बोना चाहिए। बोनी के पूर्व फफूदनाशक दवा 2 ग्राम थायरम या 1 ग्राम कार्बेन्डेजिम या वीटावेक्स 2 ग्राम $ 5 ग्राम ट्रयकोडरमा प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित करें। उपचारित बीज को रायजोबियम कल्चर 10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से उपचारित कर लगावें।
- ❖ खरपतवार नियंत्रण हेतु पेन्डीमेथीलिन 1.25 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व / हेक्टर बोनी के बाद प्रयोग करें।
- ❖ जहाँ सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो वहाँ एक हल्की सिंचाई फूल आने पर व दूसरी फलियाँ बनने की अवस्था पर करने से पैदावार में बढोतरी होती है।
- ❖ उकठा रोग फ्यूज़ेरियम नामक कवक से फैलता है। रोग के लक्षण साधारणतया फसल में फूल लगने की अवस्था पर दिखाई पडते है। सितंबर से जनवरी महिनों के बीच में यह रोग देखा जा सकता है। पौधा पीला होकर सूख जाता है। इसमें जडें सड़ कर गहरे रंग की हो जाती है तथा छाल हटाने पर जड़ से लेकर तने की उचाई तक काले रंग की धारिया पाई जाती है। उन्नत जातियों को बीज बीजोपचार करके ही बोयें। गर्मी में गहरी जुताई व अरहर के साथ ज्वार की अंतरवर्तीय फसल लेने से इस रोग का संक्रमण कम रहता है।
- ❖ बांझपन विषाणु रोग विषाणु (वायरस) से होता है। इसके लक्षण ग्रसित पौधों के उपरी शाखाओं में पत्तियाँ छोटी, हल्के रंग की तथा अधिक लगती है और फूल-फली नही लगती है। यह रोग माईट, मकड़ी के द्वारा फैलता है। इसकी रोकथाम हेतु रोग रोधी किस्मों को लगाना चाहिए।

तिल की खेती

तिल फसलो में भारत की सबसे पुरानी और खास फसल है खरीफ की इस तिलहन फसल के बीजो से करीब 50 फीसदी तेल पाया जाता है दुनियाभर में तिल के उत्पादन का 25 फीसदी हिस्सा अकेले भारत में होता है| तिल की अच्छी पैदावार के लिये लम्बा गर्म मौसम ठीक रहता है| तापमान 20 सेन्टिग्रेड से नीचे होने पर तिल का अंकुरण रूक जाता है| इसकी खेती के लिये 25 से 27 सेन्टिग्रेड तापमान उपयुक्त है। अधिक वर्षा वाले क्षेत्र इसकी खेती के लिये उपयुक्त नहीं हैं, क्योंकि इन क्षेत्रों में फफूद जनित रोगों का प्रकोप बढ़ जाता है। इसके लिए हल्की भूमि तथा दोमट भूमि अच्छी होती है। बरसात या खरीफ में इसकी खेती की जाती है यह बहुत ही ज्यादा बरसात या सूखा पड़ने पर फसल अच्छी नहीं होती है।

किस्मे- जी0जे0टी0-5, टी.के.ज़ी.-21, टी.के.ज़ी.-22, टी.के.ज़ी.-306, जे.टी.एस.-8, जी.टी.-1 जी.टी.-10, ओ.टी.-7, एन.-32, टाईप 4, टाईप12, टाईप13, टाईप 78, शेखर, प्रगति, तरुण, कृष्णा, एवम बी.63 किस्मे है।

बीज की मात्रा व तिल के बीज का बीजोपचार-

सामान्यतः शाखा वाली किस्मों के लिये 2.5 से 3 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर और शाखा रहित किस्मों के लिये 3 से 4 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर बीज पर्याप्त रहता है। बीज उपचार हेतु 1 ग्राम कार्बोन्डिजम + 2 ग्राम थाईरम या 2 ग्राम कार्बोन्डिजम या 4 ग्राम ट्राइकोडर्मा विरिडी प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से उपचारित करें। जीवाणु अंगमारी रोग से बचाव हेतु बीजों को 2 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन का 10 लीटर पानी में घोल बनाकर बीज उपचार करें। कीट नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 70 डब्लू एस की 7.5 ग्राम दवा प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित कर बुवाई करें। बुवाई से पूर्व 2.5 किलोग्राम ट्राईकोडर्मा को 2.5 टन गोबर की सड़ी खाद में मिलाकर खेत में प्रयोग करने में जड़ और तना गलन रोग की रोकथाम में मदद मिलती है। पौधे से पौधे के बीच की दूरी 30×10 सेमी रखते हुए लगभग 3 सेमी की गहराई पर बोना चाहिए।

खाद और उर्वरक-

खाद और उर्वरक का प्रयोग मिटटी जांच के आधार पर करें| फसल के अच्छे उत्पादन के लिये बुवाई से पूर्व 250 किलोग्राम जिप्सम का प्रयोग लाभकारी रहता है। बुवाई के समय 2.5 टन गोबर की खाद के साथ ऐजोटोबेक्टर व फास्फोरस विलय बैक्टिरिया (पी एस बी) 5 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर प्रयोग करें। तिल बुवाई से पूर्व 250 किलोग्राम नीम की खली का प्रयोग भी लाभदायक है।

तिल की भरपूर पैदावार के लिए सिंचित क्षेत्रों में 40 से 50 किलोग्राम नाइट्रोजन, 20 से 30 किलोग्राम फॉस्फोरस और 20 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर देनी चाहिए| लेकिन वर्षा आधारित फसल में 20 से 25 किलोग्राम नाइट्रोजन और 15 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर फॉस्फोरस की मात्रा का प्रयोग करें। मुख्य तत्वों के अतिरिक्त 10 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर गंधक का उपयोग करने से तिल की पैदावार में आशातीत वृद्धि की जा सकती है।

रोग प्रबंधन –

इसमे तिल की फिलोड़ी अवम फाईटोप्थोरा झुलसा रोग लगते है | फिलोड़ी की रोकथाम के लिए बुवाई के समय कूंड में 10जी. 15 किलोग्राम या मिथायल – ओ – डिमेटान 25 ई.सी 1 लीटर की दर से प्रयोग करना चाहिए तथा फाईटोप्थोरा झुलसा की रोकथाम हेतु 3 किलोग्राम कापर आक्सीक्लोराइड या मैन्कोजेब 2.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से आवश्यकतानुसार दो – तीन बार छिडकाव करना चाहिए। तिल में पत्ती लपेटक अवम फली बेधक कीट लगते है। इन कीटों की रोकथाम के लिए क्यूनालफास 25 ई.सी. 1.5 लीटर या मिथाइल पैराथियान 2 प्रतिशत चूर्ण 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से छिडकाव करना चाहिए

कृषि की उपरोक्त उन्नत तकनीक अपनाकर तिल की फसल से 8 से 12 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक पैदावार प्राप्त की जा सकती है|

धान की खेती

धान जनपद की एक प्रमुख फसल है जो वैज्ञानिक प्रबंधन कर उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है-

1- मिट्टी का चयन: धान को दोमट से लेकर तक विभिन्न प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है। बलुई दोमट से चिकनी दोमट मिट्टी, लेकिन अच्छी जल धारण क्षमता वाली दोमट मिट्टी सर्वश्रेष्ठ होती है।

2- खेत की तैयारी: गर्मी की जुताई के बाद 2-3 जुताई कर खेत तैयार करें, पानी को बचाने और बनाए रखने के लिए खेत की मेड़ करें। हरी खाद हेतु ढैंचा की फसल लें। खरपतवार कम के लिए रोपाई से कम से कम एक सप्ताह पहले खेत में पानी भरें, फिर खेत की जुताई करें और रोपाई करें।

3- महत्वपूर्ण किस्में: पिछले 10 वर्षों के भीतर जारी की गई किस्में- एनडीआर 2064, एनडीआर 2065, एनडीआर-2101, बल्लभ बासमती-22, 23, 24, IR-64, DRT-1, बासमती-564, PB-1 और 6, पूसा सुगंध 2,3,4 (1121), और 5, पूसा बासमती 1509, पूसा 1612 पीआरएच-10, पीआर 1160 प्रोएग्रो-6444 और 6111 आदि।

4- बीज दर: 20-25 किग्रा0 बीज प्रति हेक्टेयर (महीन), 30-35 किग्रा0 (मध्यम) एवं मोटे धान के लिए 40 किलो बीज नर्सरी में लगाने के लिए एक हेक्टेयर भूमि में रोपाई करें।

5- नर्सरी की स्थापना और उसका प्रबंधन: 1.25 मी x 8.0 मी (10 वर्गमीटर) 4 इंच की ऊंचाई के साथ के 80-100 प्लॉट तैयार करें। 220 ग्राम यूरिया और 312.50 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट प्रति प्लॉट नर्सरी दें। प्रति हेक्टेयर 100 किग्रा नाइट्रोजन और 50 किग्रा. फॉस्फोरस का प्रयोग करें। 800-1000 वर्गमीटर में नर्सरी 1 हेक्टेयर भूमि में रोपाई के लिए पर्याप्त है। नर्सरी की बुवाई के 10 दिनों के भीतर ट्राइकोडर्मा का छिड़काव करें। सुरक्षात्मक उपाय के रूप में 5 किग्रा जिंक सल्फेट 20 किग्रा यूरिया का उपयोग करें। 2.5 किलो कैल्शियम कार्बोनेट का पानी (1000 लीटर) प्रति हेक्टेयर प्रयोग करें। सफेदी को नियंत्रित करने के लिए प्रति हेक्टेयर 20 किग्रा यूरिया के साथ 4 किग्रा फेरस सल्फेट का प्रयोग करें। धान ब्लास्ट को नियंत्रित करने के लिए 500 ग्राम कार्बेन्डाजिम 50% डब्ल्यूपी प्रति हेक्टेयर का प्रयोग करें। ब्राउन स्पॉट रोग को नियंत्रित करने के लिए प्रति हेक्टेयर 2 किलो जिंक मैंग्नीज कार्बामेट का प्रयोग करें। फसल को विभिन्न कीड़ों से बचाने के लिए 1 लीटर फेनिट्रोथियोन 50EC या 1.25 ली का छिड़काव करें क्विनॉलफॉस 25EC या 1.5 ली क्लोरोपाइरीफॉस 20EC प्रति हेक्टेयर।

6- बीज उपचार: नर्सरी में बीज बोने से पहले बीज को 4 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन से उपचारित करें, सल्फेट प्रति 25 किलो बीज या 40 ग्राम प्लांटोमाइसिन को 45 लीटर पानी में घोल बना लें और इसमें बीज रात के लिए डुबो दें, बीज छाया में सुखाएं और नर्सरी में इसे बोएं ताकि जीवाणु झुलसा को नियंत्रित किया जा सके। आम तौर पर यह 8-10 लीटर पानी में 75 ग्राम थीरम या 50 ग्राम कार्बेन्डाजिम का घोल बनाकर किया जाता है 25 किलो बीज का उपचार करें। ट्राइकोडर्मा 125 ग्राम प्रति 25 किग्रा बीज का उपचार करने के लिए भी प्रयोग किया जा सकता है।

7- उर्वरक प्रबंधन: नत्रजन की आधी मात्रा तथा फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा रोपाई से पहले डालें बेसल ड्रेसिंग के रूप में और नाइट्रोजन की शेष खुराक को दो किश्तों में इस्तेमाल किया जाना चाहिए जुताई के समय और दूसरा शीर्ष ड्रेसिंग के रूप में कानों के निकलने के समय।

8- रोपाई का समय : अगेती और मध्यम पकने वाली किस्मों के लिए जून के तीसरे सप्ताह से मध्य तक जुलाई के अंतिम सप्ताह तक लंबी अवधि और सुगंधित रोपाई की जा सकती है। 20-22 दिन पुरानी नर्सरी रोपाई के लिए अच्छी मानी जाती है। दूरी: 20x15 सेमी या 20x10 सेमी गहराई: 3-4 सेमी बेहतर उपज के लिए प्रति पुंजा 2-3 पौधे रोपें। गैप फिलिंग कर उचित पौधों की संख्या वानाएं। खरपतवार प्रबंधन: प्रीटिलाक्लोर 30.7% ईसी 1.25 लीटर को 15-20 किग्रा रेत में मिलाकर प्रति हेक्टेयर प्रसारित करें। नॉमिनी गोल्ड (बिपिरिबेग सोडियम) @ 200 ग्राम प्रति हेक्टेयर रोपाई के 10 दिनों के बाद प्रयोग करें खेत में नमी की स्थिति में। प्रति वर्गमीटर (50X70 पुंजा) उचित पौधों की आबादी बनाए रखें।

अगस्त माह के कृषि कार्य

संकर धान

कीटनाशी कार्बोफ्युरॉन फ्युराडॉन जी 30 किलोग्राम प्रति हेक्टर या फोरेट 10 जी (10 किलोग्राम प्रति हेक्टर) बिचडों की रोपाई के 3 सप्ताह बाद डाले | इसके पश्चात मोनिक्रोटोफ़ॉस 36 ई.सी. (1.5 लीटर प्रति हेक्टर) या क्लोरपायरीफ़ॉस 20 ई.सी. (2.5 लीटर प्रति हेक्टर) का 15 दिनों के अंतराल पर दो छिड़काव करें ताकि फसल कीटों के आक्रमण से मुक्त रहें |

हल्दी

स्केल कीट के नियंत्रण हेतु नीम के बीज का घोल (5%) या नीम निर्मित कीटनाशी (निम्बेसिडीन, अचूक, निमेरिन) का छिड़काव (2.0 मि.ली./लीटर पानी) करने से पत्र लपेटक, भृंग तथा स्केल कीट को नियंत्रित किया जा सकता है |

धान

रोपे गये धान में फास्फोरस (सिंगल सुपर फास्फेट) व पोटाश (म्यूरेट ऑफ़ पोटाश) तथा एक चौथाई नेत्रजन का प्रयोग करें | नेत्रजन की शेष मात्रा दो या तीन बार किस्म की अवधि के अनुसार 3 तथा 6, या 3, 6 तथा 9 सप्ताह बाद यूरिया द्वारा ट्रॉपड्रेसिंग करें |

आम

सिल्ली कीट की रोकथाम के लिए 5-10 अगस्त के बीच क्किनॉलफ़ॉस (0.04 प्रतिशत) का 10-15 दिनों के अंतराल पर 3 छिड़काव करें | कीट प्रभावित टहनियों के नुकीली गाँठो की छंटाई करें |

पपीता

कॉलर रॉट के प्रकोप से पौधे जमीन के सतह से ठीक ऊपर गल कर गिर जाते है | इसके नियंत्रण के लिए पौधशाला से पौधों को रिडोमिल (2 ग्रा.ली.) दवा का छिड़काव करें, खेत में जलभराव न होने दें और जरूरत पड़ने पर खड़ी फल में भी रिडोमिल (2 ग्रा.ली.) के घोल से जल सिंचन करें |

केला

पनामा विल्ट के रोकथाम के लिए बैविस्टीन के 1.5 मि. ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल से पौधों के चारों तरफ की मिट्टी को 20 दिन के अंतराल से दो बार छिड़काव कर देना चाहिए |

अमरुद

जस्ता तत्व की कमी होने से पत्तियों का पिला पड़ना, छोटा होना तथा पौधों की बढ़वार कम हो जाने के लक्षण मिलते है | इसके नियंत्रण के लिए 2 प्रतिशत जिंक सल्फेट का छिड़काव अथवा 300 ग्रा. जिंक सल्फेट (कृषि ग्रेड) का पौधों की जड़ों में देना लाभप्रद पाया गया है |

आँवला

नीली फफूंद रोग को प्रतिबंधित करने के लिए फलों को बोरेक्स या नमक से उपचारित करने से रोग को रोका जा सकता है | फलों को कार्बेन्डाजिम या थायोफनेट मिथाइल 0.1% से उपचारित करके भी रोग नियंत्रित किया जा सकता है |

कटहल

तना बेधक कीट के नियंत्रण हेतु छिद्र को किसी पतले तार से साफ़ करके नुवाक्रान का घोल (10 मिली./ली.) अथवा पेट्रोल या केरोसिन तेल के चार-पाँच बूंद रुई में डालकर गीली चिकनी मिट्टी से बंद कर दें | इस प्रकार वाष्पीकृत गंध के प्रभाव से पिल्ल मर जाते हैं एवं तने में बने छिद्र धीरे-धीरे भर जाते हैं |

पशुपालन

एथ्रेक्स (विष ज्वर) एथ्रेक्स एंटी सीरम – गाय – भैंस में 100-150 मि.ली. चमड़े में तथा भेड़ बकरी में 50-100 मि.ली. चमड़े में | पनीसिलीन – बड़े पशुओं में 20-30 लाख यूनिट मांस में | एम्पीसिलीन- 2 ग्राम मांस अथवा शिरा में प्रति 12 से 14 घंटे में | टेट्रासाइक्लीन (टेरामाइसिन) अथवा नियोमाइसिन 20-30 मि.ली. तथा अगले दिन से आधी मात्रा पाँच दिन तक दें | सल्फामेजाथीन सोडियम (33.3:) 50-100 मि.ली. चमड़े में अथवा शिरा में दें |

कृषि विज्ञान केंद्र, दलीप नगर, कानपुर देहात
(चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर, उत्तर प्रदेश)

समाचार पत्र के आइने में................

धान का बुआई करते किसान।

कृषि विज्ञान केंद्र पर लगा धान का कैफेटेरिया, किसान होंगे लाभा

कानपुर, 30 जुलाई। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्व
कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के प्रक्षेत्र
फसल की विभिन्न प्रजातियों के प्रदर्शन हेतु क्रॉप कैफेटेरिया लगाय
केंद्र के अध्यक्ष डॉक्टर अशोक कुमार ने बताया कि इससे ज
किसानों को धान फसल से संबंधित नवीनतम तकनीकी जानका
होंगी। डॉ अशोक ने बताया कि धान की इन प्रजातियों के परीक्षण
जनपद की जलवायु के अनुकूल जो प्रजातियां बेहतर परिणाम
और अधिक किसानों के मध्य प्रचारित एवं प्रसारित किया जाएगा
किसान लाभान्वित हो। उन्होंने बताया कि संकर प्रजातियों की आ
सहनशील की 8 तथा सामान्य धान की 8 प्रजातियों के तीन खंडे
24 प्रजातियों का क्रॉप कैफेटेरिया लगाया गया है। डॉ कुमार
कि कृषक ...

अंक 220 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रू0 कानपुर, शुक्रवार 12 अगस्त 2022

दैनिक नगर छाया

RNI N.UPHIN/2007/27090

आप की आवाज़.....

वितरित किये तिरंगा और परिसर में चलाया स्वच्छता अभियान

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के वैज्ञानिकों ने आज केंद्र के परिसर पर स्वच्छता अभियान चलाया तथा जैव संवर्धित गांव अनूपपुर में तिरंगा वितरित किए। केंद्र के अध्यक्ष डॉ रामप्रकाश
बताया कि संस्कृति मंत्रालय भ
सरकार द्वारा आजादी का अमृत महो
स्वतंत्रता के 75 साल और इसके
संस्कृति और उपलब्धियों के गौरव
इतिहास को मनाने के लिए
सरकार की एक पहल है। जि
माध्यम से भारत सरकार द्वारा हर
तिरंगा अभियान का शुरुआत किय

वितरण कार्यक्रम का आयोजन कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर, कानपुर देहात द्वारा किया गया। कार्यक्रम में केंद्र के अध्यक्ष ने कहा की देश की आज़ादी में ना जाने कितने शहीदों ने अपने प्राण ...

...ला कानपुर देहात 13/08/2022

...क खेती में नहीं होता ...क उर्वरकों का प्रयोग

...जानकारी देते मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खां। संवाद

सहतावनपुरवा गांव में मृदा वैज्ञानिक ने किसानों को दी जानकारी

...क खेती कृषि की ... इसमें रसायनिक ...शकों का प्रयोग ... है। यह बात ...

उपलब्ध मित्र कीट व जैविक कीटनाशकों का प्रयोग कर फसलों ...बचाया

(हिन्दी दैनिक)

R.N.I. No. Utthin/2018/7...

(गांव देहात की खबर, शहर पर भी नजर)

दि ग्राम टुडे

उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश से एक साथ प्रसारित

वर्ष : 05 अंक : 13 देहरादून, रविवार, 31 जुलाई 2022 पृष्ठ:12 मूल्य...

कृषि विज्ञान केंद्र पर लगा धान का क्रॉप कैफेटेरिया, किसान होगे लाभान्वित

दि ग्राम टुडे,कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के प्रक्षेत्र पर धान फसल की विभिन्न प्रजातियों के प्रदर्शन हेतु क्रॉप कैफेटेरिया लगाया गया है। केंद्र के अध्यक्ष डॉक्टर अशोक कुमार ने बताया कि इससे जनपद के किसानों को धान फसल से संबंधित नवीनतम तकनीकी जानकारियां प्राप्त होंगी।

डॉ अशोक ने बताया कि धान की इन प्रजातियों के परीक्षण के उपरांत जनपद की जलवायु के अनुकूल जो प्रजातियां बेहतर परिणाम देंगी। उन्हें और अधिक किसानों के मध्य प्रचारित एवं प्रसारित किया जाएगा। जिससे किसान लाभान्वित उन्होंने बताया कि संकर प्रजातियों की आठ, ऊसर सहनशील की 8 तथा सामान्य धान की 8 प्रजातियों के तीन

खंडों में कुल 24 प्रजातियों का क्रॉप कैफेटेरिया लगाया गया है। डॉ कुमार ने बताया कि कृषक स्वयं क्राफ्ट कैफेटेरिया को देखकर धान की उत्तम प्रजातियों का मूल्यांकन कर सकेंगे और क्षेत्र के अनुकूल प्रजातियों का भी चयन कर सकेंगे जिससे उन्हें लाभ प्राप्त हो। इस अवसर पर डॉक्टर शशिकांत, डॉक्टर खलील खान, डॉक्टर अरुण कुमार सिंह, डॉ विनोद प्रकाश, डॉक्टर निमिषा अवस्थी एवं अभिषेक सिंह सहित अन्य लो... उपस्थित रहे।

WORLD खबर एक्सप्रेस

कानपुर नगर

शुक्रवार 12 अगस्त 202...

आजादी के 75वें अमृत महोत्सव के अवसर पर वितरित किए गए तिरंगा ध्वज

किसानों को दी प्राकृतिक खेती की जानक...

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर द्वारा आजादी के 75वें अमृत महोत्सव के उपलक्ष में किसानों को गांव सहतावन पुरवा में प्राकृतिक खेती के बारे में जानकारी दी गई । इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने प्राकृतिक खेती के समस्त घटकों की विस्तार से जानकारी देकर अधिक एवं गुणवत्ता युक्त उत्पादन लेने की तकनीक बताई।

इस अवसर पर बताया गया कि प्राकृतिक खेती कृषि की प्राचीन पद्धति है। प्राकृतिक खेती में रासायनिक उर्वरक एवं कीटनाशकों का प्रयोग नहीं किया जाता है। डॉक्टर खान ने किसानों को बताया कि प्राकृतिक खेती में खाद के रूप में देसी गाय का गोबर,जीवाणु खाद, फसल अवशेष आदि द्वारा पौधों को पोषक तत्व दिए जाते हैं। प्राकृतिक खेती में प्रकृति में उपलब्ध मित्र कीट एवं जैविक कीटनाशकों का प्रयोग कर ...ों को कीट एवं रोगों से बचाया जाता है। जिससे कृषि लागत कम होती है और उत्पादन अधिक होता है।कृषि विज्ञान केंद्र के अध्यक्ष डॉ. राम प्रकाश ने बताया कि रासायनिक कीटनाशकों एवं उर्वरकों के प्रयोग कर लोग बीमार हो रहे हैं इसलिए प्राकृतिक खेती की आवश्यकता है।

इस अवसर पर हर घर तिरंगा कार्यक्रम के तहत 50 तिरंगा ध्वज किसानों को वितरित किए गए। इस अवसर पर डॉ. ए के सिंह, डॉ शशिकांत, डॉक्टर विनोद प्रकाश, डॉक्टर अरुण सिंह, डॉक्टर निमिषा सहित गांव के प्रगतिशील ... सिंह सहित एक सैकड़ा किसान उपस्थित रहे।

कृषि विज्ञान केंद्र, दलीप नगर, कानपुर देहात

(चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर, उत्तर प्रदेश)

समाचार पत्र के आइने में................

WORLD खबर EXPRESS
शनिवार 30 जुलाई 2022 | अंक - 198
www.worldkhabarexpress.media
www.worldkhabarexpress.com
www.twitter.com/worldkhabarexpress www.facebook.com

कृषि विज्ञान केंद्र पर ल...

को साधन ...

कानपुर। आज़ादी का अमृत महो... घर तिरंगा कार्यक्रम सप्ताह में ग्राम... उद्योग महिलाओं के आय का ... प्रशिक्षण आयोजित कराया। कार्य... करते हुए गृह वैज्ञानिक डॉ. नि... बताया कुटीर उद्योग सामूहिक ... को कहते हैं जिनमें उत्पाद एवं ... अपने घर में ही किया जाता ... कारखाने में। कुटीर उद्योगों में ... द्वारा कम पूंजी एवं अधिक कुशल... हाथों के माध्यम से अपने घरों में ... निर्माण किया जाता है। भारत में प्राचीन काल से ... कुटीर उद्योगों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। ...जों के भारत आगमन के पश्चात् देश में ... उद्योगों तेजी से नष्ट हुए एवं परम्परागत ... ने अन्य व्यवसाय अपना लिया। किन्तु

... मशरूम के पोषण मान की जानकारी दे... अजय कुमार सिंह ने बताया की मशरूम क... एवम प्रसंस्करण भी कुटीर उद्योग के रूप ... कर आय अर्जित की जा सकती है।

Sign in to edit and save changes to this file.

शाश्वत टाइम्स
हिन्दी दैनिक
वर्ष : 7, अंक :112 पृष्ठ : 12
कानपुर महानगर, शनिवार
13 अगस्त, 2022
मूल्य ₹ 3.00
www.shashwattimes.com

काशी विश्वनाथ कॉरिडोर के तर्ज पर बनेगा संगम कॉरिडोर महाकुंभ 2025 से पहले बनकर हो जाएगा तैयार: डिप्टी सीएम...6

आजादी के 75वें अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में दी किसानों को प्राकृतिक खेती की जानकारी, वितरित किए तिरंगा ध्वज

शाश्वत टाइम्स कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर द्वारा आजादी के 75वें अमृत महोत्सव के उपलक्ष में किसानों को गांव सहतावन पुरवा में प्राकृतिक खेती के बारे में जानकारी दी गई इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने प्राकृतिक खेती के समस्त घटकों की विस्तार से जानकारी देकर अधिक एवं गुणवत्ता युक्त उत्पादन लेने की तकनीक बताई। इस अवसर पर बताया गया कि प्राकृतिक खेती कृषि की प्राचीन पद्धति है। प्राकृतिक खेती में रासायनिक उर्वरक एवं कीटनाशकों का प्रयोग नहीं किया जाता है। डॉक्टर खान ने किसानों को बताया कि प्राकृतिक खेती में खाद के रूप में देसी गाय का गोबर,जीवाणु खाद, फसल अवशेष आदि द्वारा पौधों को पोषक तत्व दिए जाते हैं। प्राकृतिक खेती में प्रकृति में उपलब्ध मित्र कीट एवं ... कीटनाशकों का प्रयोग कर फसलों को कीट एवं रोगों से बचाया जाता है। जिससे कृषि लागत कम होती है और उत्पादन अधिक होता है।कृषि विज्ञान केंद्र के अध्यक्ष डॉ राम प्रकाश ने बताया कि रासायनिक कीटनाशकों एवं उर्वरकों के प्रयोग कर लोग बीमार हो रहे हैं इसलिए प्राकृतिक खेती की आवश्यकता है।इस अवसर पर

दैनिक जागरण कानपुर देहात 13/08/2022

सहतावनपुरवा गांव में किसानों को प्राकृतिक खेती के लाभ बताते कृषि विज्ञानी डा. खलील खान ● स्वयं

कृषि विज्ञानियों ने प्राकृतिक खेती करने पर दिया जोर

जागरण संवाददाता, कानपुर देहात : आजादी का अमृत महोत्सव के तहत सहतावनपुरवा में आयोजित कृषि गोष्ठी में किसानों को प्राकृतिक खेती के बारे में विज्ञानियों ने जानकारी दी। मृदा विज्ञानी डा. खलील खान ने बताया कि प्राकृतिक खेती कृषि की पुरानी पद्धति है। कम खर्च में शुद्ध उपज ली जा सकती है जिसके खाने से तमाम प्रकार की खतरनाक बीमारियों से भी बचा जा सकता है। किसानों को तिरंगा भी वितरित किया गया।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के निर्देशन में गोष्ठी के दौरान प्राकृतिक खेती व रासायनिक खेती पद्धति में अंतर समझाया। मृदा विज्ञानी डा. खलील खान ने प्राकृतिक खेती के घटकों की जानकारी देकर अधिक और गुणवत्ता युक्त उत्पादन लेने की तकनीक बताई। प्राकृतिक खेती में रासायनिक उर्वरक व कीटनाशकों का प्रयोग नहीं किया जाता है। प्राकृतिक खेती में खाद के रूप में देसी गाय का गोबर, जीवाणु खाद, फसल अवशेष आदि से पौधों को पोषक तत्व दिए जाते हैं।

प्रकृति में उपलब्ध मित्र कीट, जैविक कीटनाशकों का प्रयोग कर फसलों को कीटों व रोगों से बचाया जाता है जिससे कृषि लागत कम होती है और उत्पादन अधिक होता है।

कृषि विज्ञान केंद्र अध्यक्ष डा. राम प्रकाश ने बताया कि अंधाधुंध रासायनिक खादों व कीटनाशकों के प्रयोग से लोग बीमार हो रहे हैं जीवन को सुरक्षित रखने के लिए प्राकृतिक खेती की अब विशेष आवश्यकता है।

इस मौके पर डा. एके सिंह, डा. शशिकांत, डा. विनोद प्रकाश, डा. अरुण सिंह, डा. निमिषा अवस्थी के अलावा प्रगतिशील किसान चुन्ना सिंह उपस्थित रहे।